

1. K56

हंस

ॐ तुनियखचत्रिविप्रहंसनूपायविमहितनाडीकियुवोदया॥ अज
यागयति॥

ॐ नमः॥ ग्रागुनूवनमः॥ गगानिखकमलिक॥ ॥
ॐ क्रीं आत्मनत्वाय स्वाहा॥ ॐ क्रीं विद्यानत्वाय स्वाहा॥
ॐ क्रीं निवनत्वाय स्वाहा॥ ॐ सैं सवनत्वाय स्वाहा॥ ॐ न
ज्माय रुन् ॥ ॐ कनिधकास्यां नमः॥ ॐ अं काय अ
नामिकास्यां नमः॥ ॐ वस्वः॥ कालिनीमध्वमास्यां

नमः॥ द्रुं न ऊं न्या स्यां नमः॥ ह्रीं अंगु द्या स्यां नमः॥ वं क
 व म व द द्या स्यां॥ ॐ नित क व न्या स॥ ग मा ऊं ग न्या स॥ वं
 अ स्था य हृद्॥ अं हृ द या य नमः॥ अ क्का य नि व स स्था
 हा॥ उ उ व स ४ कालि ना नि र्वा ये वो व द्॥ द्रुं क व वा
 य द्रुं॥ ह्रीं न व य या य व व द्॥ वं अ स्था य हृद्॥ ज ल या

१ य म स द्वा द य न्॥ अ क पू ज॥

उ पू ज॥ व उ ग॥ द लु न नमः॥ ॐ वि ष स नमः॥ वि
 या ॐ लि॥ ॐ क्रीं क्रीं स ४ सूर्या य नमः॥ ध न व लि॥ व द
 ना क न य र्थ नमः॥ ज य॥ क्रीं स्था हा १०॥ स्था य॥ उ वा
 कू स म स कां गं का थ यी य म हा द नि॥ ग मा त्रिं स र्व वा
 य द्रु व न मा मि दि वा क री॥ अ य ग न्धा दि॥ ॐ नि सूर्य

दवाचर्चनी ॥ ७ ॥ नमो विष्णु दवाचर्चनी ॥ आचमनी ॥ डी
असायनम ॥ डी कनिष्ठकास्यानम ॥ डी अनामिका
स्यानम ॥ डी मध्वमास्यानम ॥ डी नर्जनीस्यानम ॥
डी अंगुष्ठास्यानम ॥ डी कलमवयवास्यानम ॥
डी हृदयायनम ॥ डी निवसस्वाहा ॥ डी निखायेवो

षट् ॥ डी कवचायद् ॥ डी नज्जयायेव षट् ॥ डी असा
यद् ॥ ७ ॥ विर्यंजलि ॥ डी सङ्कुं नमानायाय वि
ष्णुत्मन डी स्वाहा ॥ धनं वलि ॥ र्चनार्कमयूर्यनम ॥
जय ॥ डी स्वाहा ॥ १० ॥ स्वाय ॥ नमो स्तुतं नगायत्यादि ॥ ७ ॥
ॐ निविष्णु दवाचर्चनी ॥ ७ ॥ नमो गदाजिव दवाचर्चनी ॥ आ

वमनी॥ न्यास॥ ॐ॥ अस्त्राय नमः॥ ॐ॥ कनिष्ठास्थी नमः॥
॥ ॐ॥ अनामिकास्थी नमः॥ ॐ॥ मध्यामास्थी नमः॥ ॐ॥ न
र्जनीस्थी नमः॥ ॐ॥ अंगुष्ठास्थी नमः॥ ॐ॥ कवचवयुष्ठा
स्थी नमः॥ ॥ ॐ॥ हृदयाय नमः॥ ॐ॥ निवसस्त्राहा॥ ॐ॥
निखायेवोषट्॥ ॐ॥ कवचाय हुँ॥ ॐ॥ नयनयायेव वषट्॥

ॐ॥ अस्त्राय हुँ॥ ॥ वियंजलि॥ हौं हौं स॥ गङ्गा नि
वाय नमः॥ धनं वलि॥ र्चिदनाकनयूर्ध्वं नमः॥ जय॥
हौं स्त्राहा॥ १०॥ स्त्राहा॥ निर्वर्णितवर्त्मसाक्षीत्यादि॥ ७॥
ॐ॥ निगङ्गा निवदवाच्चर्चनं॥ ७॥ नमो अस्त्राय दवाच्चर्चनं॥
आवमनी॥ न्यास॥ ॐ॥ नमस्तुभ्यं॥ नमस्तुभ्यं॥ नमस्तुभ्यं॥

गुप्ताश्रयनम॥ ॐ अथात्र सर्वात्मनक निष्ठायां नः
म॥ ॐ अथात्र बुद्ध अनामि स्था हा॥ ॐ अथात्र धात्र नल
त्यस्य लिनी मध्व मायां नम॥ ॐ सर्वं नः सर्वं सर्वं त्या
यिं गल नऊ नीत्यां नम॥ ई सः ४ आ ति वू य अं गु स्था
नम॥ ॐ नमः स्रुत वू य स्रुत दया गु स्था क ल न व

पद्मायां नम॥ ॐ अथात्र सर्वात्मन हृदया येन म
॥ अथात्र बुद्ध नि व स स्था हा॥ अथात्र धात्र नल त्यस्य लि
नी निरवा ये वो वट्॥ सर्वं नः सर्वं सर्वं त्यायिं गल क व वा
य ई॥ ई सः ४ आ ति वू य न ऊ य या य व वट्॥ ॐ नमः स्रु
त वू य स्रुत दया गु स्था अश्रय रुट्॥ ॥ विभी ज

लि॥७॥ कौं अ धा व कौं थ धा व कौं धा व धा व न व दू दूः
सर्व न सर्व सर्व कं र स ४ कौं वू ड ४ वू थ ड ४ नि र वा ख रु
रु म हा रु व वा य स दा नि वा य न म ॥ थ न व लि ॥ रं द न
रु न वृ थ न म ॥ ज य ॥ कौं अ धा वा य स्वा हा १० ॥ स्वा य ॥
म नू का व न ला दि ॥ ॥ ॐ नि अ धा व द वा र्च न ॥ ॥

न मा मृ त्युं ज य द वा र्च न ॥ आ व म्भ ॥ न्या स ॥ ईं स ४ अ स्था
य रु द ॥ ईं स ४ क नि रु का र्था न म ॥ ईं स ४ अ ना मि का
र्था न म ॥ ईं स ४ म ध मा र्था न म ॥ ईं स ४ न र्ज नी र्था न म ॥
ईं स ४ अं शु द्धा र्था न म ॥ ईं स ४ क ल ग ल य द र्था न म ॥
॥ ईं स ४ रु द या य न म ॥ ईं स ४ नि व स स्वा हा ॥ ईं स ४

निरायेयोषट् ॥ ईं स ४ क व वा य दू ॥ ईं स ४ म ज य या य व
षट् ॥ ईं स ४ अ सु आय रुट् ॥ ७ ॥ ईं स ४ अ म नी स म हा रे व
वा य ण दा नि वा य न म ॥ धि यां ज लि ॥ धनी व लि ॥ वंद ना
क न य र्थ न म ॥ ज य ॥ ईं स ४ स्वा हा ॥ १० ॥ स्वा व ॥ के ला ण
स्वा रु व णं ॥ ग सु रु सु नि क स त्रि रूं । न मा गु ण नि ही य न

म त्पुं ज य न मा मु न ॥ ७ ॥ ॐ नि म त्पुं ज य द वा च्च नी ॥ ७ ॥ ७

ॐ न म ॥ श्री गु व व ॥ श्री गुरु न सा य न म ॥ गु व न म स्का र
॥ अ र व गु म गु ला का र्वा य कं ज न व ला च ली । न र्त्त द द
धि नं ज न न स्त्री श्री गु व व न म ॥ गु व ४ व द्वा गु व वि वू

गुनदवमहेश्वरः॥ गुनदवयवः॥ वक्रनसोऽग्रीगुनः
वनम॥ गुनस्थानम॥ यत्रमगुनः॥ स्थानम॥ यत्रमधि
गुनस्थानम॥ यत्रमाचार्यगुनस्थानम॥ अमकानन्द
नाथयनम॥ ५॥ आदिदवनायवाद्का॥ यद्मास्त्राय
वाद्का॥ कर्मास्त्राय॥ आत्मास्त्रायवाद्का॥ किलि१॥

१ या नायाम॥ यै १५ लै १२ व १०॥ २
विश्वकां कनायक अशायरुद॥ ईरुद्वजयडल स्वा
हा॥ वलमकुलकुलमवलकांकां ईरुद्वखाहा॥ न्यासा॥
किलि१ विश्वकां कनायक अशायरुद॥ नमारुगवगी
हकमलायकां अगुनस्थानम॥ अं कृदिकार्यकुल
दीयायेकां नृनीस्थानम॥ अं अं अं ववलायेकमः

ॐ मास्यां नमः॥ वलमकुलप्रधावामुखीवद्वययाये
कं अनामिकास्यां नमः॥ ॐ ॐ महानात्रिकाये ॐ कनि
सास्यां नमः॥ किनि २ विष्वक्कां कनाये कवयसास्यां नः
मः॥ ॐ निकमन्यासः॥ ॥ नमः ४ वरुणाय ॥ नमः ४
गवमीरुलमलाये ॐ श्री उद्धवकाययादकां॥ ॐ

कृदिकाये कलदीयाये ॐ श्री पूर्ववकाययादकां॥
ॐ ॐ ॐ वरुणाय ॐ श्री दक्षिणवकाययादकां॥ व
लमकुलप्रधावामुखीवद्वययाये ॐ उद्धवकाय
यादकां॥ ॐ ॐ महानात्रिकाये ॐ श्री यन्त्रिमदकाय
यादकां॥ किनि २ विष्वक्कां कनाये ॐ ४ उद्धवकाय

यादकी॥ ॥ ॐ निवर्तु न्यास॥ ॥ नमः ॐ गी न्यास॥
नमारुगवनी हल म लाये डौ ह द या य न म॥ ॐ
कृत्तिकाये कल दी पाये डौ निवस स्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ व
व लाये डौ निवसये वो षट्॥ वल म क ल अथा गाम् स्त्री
वदू य याये डौ कव वाय डौ॥ ॐ ॐ मद का त्रिकायेः

डौ नय याय व षट्॥ कि निश्चि च की कं नाये डः ॐ
स्त्राये य षट्॥ ॐ नि ॐ ग न्यास॥ ॥ नद स द न न ल
ज ल वा य यू जा॥ ज ल या श स्त्राय या द की॥ ॐ आः
न न न कि रे व वा नं द वी वा धि य य य म् ॥ श्री ज म् ल या
उ रु द्र त्रि का य या द की॥ व दं ल न स म् ॥ य म् ॥ डौ

हृदयाय नमः॥ कौं गिरमस्वाहा॥ कौं गिराये वोषट्॥ कौं
कवचाय दूँ॥ कौं नमः शाय वषट्॥ ऊ॥ अस्त्राय हूँ॥
आवाहनस्तुतय सर्वदनाक्रमयेत्यं नमः॥ धनमूडी द
र्शयन्॥ सिद्धिनाथाय विद्महे कृद्विकार्ये श्रीमहानना
माक्रमयवा दयान्॥ ॥ नमो अर्घ्याय यज्जा॥ अर्घ्या

ग्राह्याययादुकी॥ ॥ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ४ य मू व श धा व र न व न
न मू य व ट श य व ठ श क रु श व म श द म श ध म श घा न थ श
वि घा न थ श वि च्छि श ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ का मा त्रिका वि ष्व या द
की॥ ॥ औं ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं आ न न रे व वा य मूं आ न
न रे व वा य कि ण हि ना श्रीं य या द की॥ ख दे श्रीं ग न

संयुक्त ॥ आवाहन स्थापन वंदना कर्मवर्ष नमः ॥ या नि
मृदां दर्शयत ॥ ॐ नमो अर्चयाम्युज्ज्वला ॥ ५ ॥ नमो भुवने ॥
ॐ नमो श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥
श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥
ॐ नमो आत्मयुजा ॥ विन्दुय ३ ॥ कृष्णं यादकी ३ ॥ ॥ नमो
१ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ॥

[illegible]

दुर्का॥ यां वलदी यधमा दवी महा का ल क उ या ला य
या दुर्का॥ वलि॥ नया स्या य या दुर्का॥ यां या जि म्ये या द
का॥ वलि॥ सिंहा स्या य या दुर्का॥ शुं श्री सि द्वि याम् (७)
श्वयी या दुर्का॥ वलि॥ गज दलु न जनी विदू यानि मू
र्ति दर्शय न्॥ जाय॥ श्लं स्वाहा॥ श्रीं दी॥ यां॥ यो॥ शुं॥ ॥

(७) यां यं कू मारं गग लम न निरुं क उ यं या जिनी श्व
याम् (७) उ व या द मि न रु य रु रं वि धि हा रं ग (७) मं।
यू या श धू य दी या वि व म रि व लि रि च वि ना रु वि ना
गं च क सं पू ज का नां जू रि म नि व व दा उ कि दा म् कि दा
य॥ ७॥ यं व व त्या ज न वि (७) म स्त व व वि पू र्ण म मु॥ ॥

श्रीसर्वरुतनआवाहन॥५॥ **विदव३॥** ॥ यद्वासना
ययादकी॥ **धूम्रं** श्रीनवात्माननरुगुप्तमलुरुहावि
काययादकी॥ **धूम्रं** धनवलि॥ ॥ **धूम्रं** मूर्ति॥ नमाः
रुगवती **धूम्रं** क **धूम्रं** वि काये जाँ जाँ **धूम्रं** धा **धूम्रं** प्रज्वा
प्रज्वा यामूखी **धूम्रं** **धूम्रं** कि लि कि लि वि वि **धूम्रं** म **धूम्रं** दवना

ययादकी॥ **धूम्रं** ॥ **धूम्रं** सिंहासनाययादकी॥ **धूम्रं** **धूम्रं** राज
यद **धूम्रं** उग्रवदी वि वृ मर्दिनी **धूम्रं** सदाय **धूम्रं** शर्मा **धूम्रं**
सम **धूम्रं** नम॥ **धूम्रं** धनवलि॥ **धूम्रं** अ **धूम्रं** वक्रालेयादकी॥ **धूम्रं**
माह **धूम्रं** येयादकी॥ **धूम्रं** चकामायेयादकी॥ **धूम्रं** टवेयुयेयादकी॥
धूम्रं नवाभायेयादकी॥ **धूम्रं** **धूम्रं** न्द्रायेयादकी॥ **धूम्रं** यामू **धूम्रं**

ये यादकी॥ श्रीमहालक्ष्मी यादकी॥ धनवलि॥ ७ ॥
अहरेसरे॥ ३२ अथा विना तिकर्मरुहा वि काय याद
की॥ स्वाहा वक्रय नासाय यादकी॥ अहरेसरे ३२ सरे
हरे अय विमसमया दद्याय यादकी॥ बर्द्ध (गनसीयू
क्ष॥ धनवलि॥ आरुनादि॥ यानिमूर्त्ता दर्शयन्॥ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं यादकी॥ ॥ त्रैलोक्यं यादकी॥ ॥
ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ निखास्य वृन्दमहाहलवाय गृहिः
गृहियमावा ॥ यादकी यज्यामिनमः॥ ॥ कौक
ययायायवलि ॥ गृह २ स्वाहा॥ यो यागि न्येवलि गृह
२ स्वाहा॥ श्रीं क्लीं कल यजवदकनाथयवलि गृह २ स्वा

हा॥ ॐ श्री सिद्धि वाम भुवने वलि गृह २ स्वाहा॥ ॐ कूल ग
ले ॐ नारायण वलि गृह २ स्वाहा॥ ॐ कनवी नमः सा ना धिय
नय वलि गृह २ स्वाहा॥ आ का ॐ त्रिणी सव ॐ स्था ॐ
मायूजा वलि गृह २ स्वाहा॥ सर्व स्था रु न स्था स द स्था वि
ॐ य स्था सर्व स्था ॐ द द न स्था ॐ मायूजा वलि गृह

२ स्वाहा॥ आ वा रु न स्था य न व द ना रु न य न म॥ या
लि मूडा॥ विन्दु य ३॥ नमः ४ श्री ना था य न म॥ श्री सिद्धि
ना था य न म॥ श्री कृ ङ ना था य न म॥ य न द ना रु न व लि
स न य॥ धू य दी व ने व य ४॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ जा य ॥ ॐ
स्वाहा॥ श्री क्री स्वाहा॥ ॐ स्वाहा॥ ॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ स्वाहा॥

गुह्यानिगुह्य (ग) कालं गृह्णानास्मिन्कर्मजय। सिद्धिः
 वडुमदवील्यस्य सादामरुध्वी॥ ॥ मलुलदयक॥ स्वा
 नवाय॥ अखलुमलुलाकारं स्यादि॥ ॥ श्रीमहादेववा
 य॥ ॥ श्रीदयूवाच॥ श्रीसर्वलमलुलान्त्यादि॥ मज्जादा
 थं (म) का॥ एकानकरुवनिगकिमूर्तिपू (पु) ष्यत्री वाः

१ अथर्ग आदि॥ विन्दुयय ३॥

सुरुनशीगग (ग) यमा रुगवनीनि ४ (ग) ष्यत्री दकि (ग) स्त्र
 नागम्यकल ष्यत्री कलगलावागू (ग) दिग्मय का श्री वाः
 मायुलमा मि वि ष्यजननी द (ग) ष्यत्री सिद्धिदी॥ स्वानका
 काय॥ अश्वयूवर्गमयदं रुगवनीयेन न्ययूयाल्यकास्त्र
 नष्टावदुगानथाह विदुर्मवक्रात्मलीनस्तथा। रासाह

नवयंकजं नदन्ता ग्रीया गिनी यंत्रकं यं दार्द्धा वमीनी
 बद्धविमलं मां यां तु निर्यं ग्री कृजं ॥ ॥ डी आवमनी सा
 हा ॥ कि लि २ विश्व कां कनाये ड ४ अस्मा यरु २ ॥ वें डी :
 श्री डूं क्षों ॥ क्षों डूं ग्री डी वें ॥ वें डी ग्री डूं क्षों ॥ लं खड्य
 य ॥ ॥ मणुलक यंक ॥ सूर्य साखि थाय ॥ ॥ ०० नि नि

[illegible]

[illegible]

ॐ श्री यन्त्रिमञ्जरी श्री यादकी ॥ यन्त्रिमञ्जरी ॥
॥ श्री ॥ ॐ श्री अनादि महावीर १० मन्त्रमर्दक उकेल गृह
होतु दि काये श्री कुलवक्त्र श्री अम्बा याद
की य उज्यामि ॥ ॐ श्री अनादि महावीर १० मन्त्रम
हा उकेल गृह होतु दि काये श्री कुलवक्त्र

श्री अम्बा याद का पूजयामि ॥ उयत्र इया ॥ ॥ वंदी श्रीः
 कुं श्री हरे आन्द ग कि रे व वानन्द विराधियमय सर
 मूत्र स्नान रुका त्रिका ययदकी ॥ वसिष्ठ ममूत्र धाना ॥
 के वं के लं डी है स के लं डी स के लं डी याद की ॥ यवदनी
 ॥ ॥ वं के वं ०० लं डी है स के लं डी स के लं डी याद की ॥

यादनी ॥ ॥ श्री डी क्री वं सों लं डी के वं ०० लं डी है स के लं
 लं डी स के लं डी श्री डी सों वं क्री डी श्री ॥ श्री विद्या ॥
 श्री श्री श्री डी डी क्री क्री वं वं सों सों लं डी ॥
 १ ८ १५ २ १३ ३ १२ ५ ११ ५ १० ७ १२
 लं हो श्री कृलिका ॥ ॥ लं हो श्री कृलिका ॥ ॥

[illegible]

श्रीकृष्णनामयनया॥ ॥ हूं ॥ ह्रीं ह्रूं ह्रौं श्रीमसना
 यनम॥ श्रीमसनया॥ ॥ व्रं जं डं डावनि वू दविनम॥
 दूवनिया॥ ॥ व्रं जं सरे काळादवीपादकीं॥ काळादवीः
 या॥ ॥ व्रं नूं खूं मत्रस्वनिनम॥ सुनस्वनिया॥ ॥ व्रं औं न
 भारुगवनश्रीकर्षनायनम॥ बलरुडया॥ ॥ व्रं व्रं य

[illegible][illegible]

वैष्णो नमः श्रीनिवासाय सविताय सिद्धाय सर्वोधि
कायाय वक्ष्ये नमः॥ ॥ वैष्णो नमः॥ ॥ वैष्णो नमः॥
कं० कं० कं० ८ कं० ८ कं० सकलादिमहाभूतेश्वर
यशस्वाका कर्षणा य महानिवासाय सविताय

थञ्जर्वयादुका॥ ॥ ज्ञां ज्ञेलाकमप्रयत्रमाकर
खाला॥ ॥ ज्ञानिप्रज्ञ नृनायविस्मरु निग्राकालाय
धीमरुनन्नाइत्ययथादूयान्॥ ॥ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं
हीनिर्वाणसंवत्तानलानन्दनाथहीनिर्वाण
ध्वनीशमयावताम्बायायूऊष्यामि॥ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं
ॐ निनिर्वाण॥

2571

१ मूलयागिया अलिशा ॥ वं अ हं र सं र न मारु गत नि श्रुं कृदिकाय
श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं न म अ धा ग म स्त्री का क्री कि वि र वि ध सं र हं र
श्रुं अ ॥

खं क्री श्रा श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं न मारु गत नि श्रुं कृदिकाय श्रुं श्रुं श्रुं
र ल म क ल अ धा ग म श्रुं श्रुं म स्त्री का क्री कि वि र वि ध श्रुं श्रुं श्रुं
श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं म म स या द या य या द कां ॥ ॥ श्रुं श्रुं

[illegible]

गा॥ ह्रीं० यमाया धाद॥ ह्रीं० यमासा दयमा॥ ह्रीं०
ह्रीं० यमा॥ ४४ अन्तरयमा॥ धर्मयमा॥ ॥
ह्रीं० ह्रीं० सत्रस्रतिनमः॥ ॥ ह्रीं० ह्रीं० ह्रीं० ४ धीरि
यमा॥ ॥ ह्रीं० ह्रीं० ह्रीं० धीरि यमा॥ ॥
३ धीरि यमा॥ ॥ ह्रीं० ह्रीं० ह्रीं० धीरि यमा॥ ॥

२५ हं ऐ ना ठ श्र व म हू ऐ व वा य सँ ऐ ना ठ श्र वी श कि स
हि मा य या दू कां ॥ कौ न दि न २ ॥ हूँ म हूँ का ला य २ ॥ ॥
२६ कौ सर्व कर्मा र्थ सा ध नी व क श्र वि व क र्यं उ व म धः
ग न कौ कौ न व कौ कौ नि ह म द द व कौ वि य मा व क
श्र वी शी या य ॥ व क श्र वि स म य वि धा ॥ ॥

२७ कौ व द श कौ २ ॥ कौ ॥ पू र्वा मा य स म या ॥ ॥ २८ कौ
न कौ म द व क ल कौ ॥ क कि ण मा या ॥ ॥ २९ कौ कौ कौ
कौ न मा रु ग व नि अ व कौ कौ कौ कौ कौ कौ
कौ २३ न म अ धा रा म कौ कौ कौ कौ कौ कौ
वि च कौ कौ कौ कौ ॥ व कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ
वि मा मा य स म या ॥

[illegible]

श्रीश्रीरुद्रसाहस॥ सिद्धिलक्ष्मीयामालामन्त्र॥ ॥
 ह्रीं॥ रुद्रनक्षत्रविद्या॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ॐ नमो
 गवनिमा रुद्रप्रियुन्नयुद्धेश्वरी साहस॥ अन्नयुद्धया॥
 १३ क्लीं का रुद्रप्रियुन्नयुद्धेश्वरी साहस॥ अन्नयुद्धया॥
 प्रियुन्नयुद्धेश्वरी साहस॥ अन्नयुद्धया॥

कलगां श्रीसर्वशक्रयनागिनिद्रावयसर्वकस्य
माहिनिद्रावयशुद्धादनसर्ववर्गकस्य स्वाहा ॥ काला
विद्या ॥ ॥ ॐ क्रीं ग्रीं क्रीं मलालक्रीं ॥ मलालक्रीं विद्या ॥
॥ ॐ क्रीं वगलाम्खिसर्वदुश्चर्मां मुखवार्त्तकस्य जिह्वा
वीलयश्चर्दिनागक्रीं स्वाहा ॥ वगलाम्खिविद्या ॥ ॥

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॥ कालि २ मलालकालिकिलि २ मलाले २
विचकुं स्वाहा ॥ मलालकालिविद्या ॥ ॥ ग्रीं क्रीं क्रीं विचकुं
वैरावनीयद्वंद्वद्वंद्व स्वाहा ॥ चित्रमलालविद्या ॥ ॥
ॐ सोमप्रवधरयवधुवाय २ ॥ कुरु स्वाहा ॥ ॥ ॐ क्रीं ग्रीं
क्रीं यस्त्र २ स्त्र २ धा २ नन २ यचठ २ यचठ २ कुरु २

[illegible]

ॐ रु सिद्धि कला ला जाँ चूँ दूँ श्री रु न म स्वाहा ॥ ॥
 ॐ जाँ खुँ रुँ सं रुँ खुँ जाँ ॐ ॥ ॥ वँ जाँ श्री ॐ श्री जाँ काँ य
 वँ लँ वँ गँ वँ सं होँ रुँ सः स्वाहा ॥ ॥ ॐ वँ जाँ काँ रु ग व नी
 श्री श्री श्री सुरु मला सुरु वुरु श्री श्री श्री सुरु वुरु काट स्व
 गी न श्री श्री मः ॥ सुरु काट श्री श्री श्री श्री श्री मनु ॥ ॥

[illegible]

कां॥ ह्रीं आमर्दनाथसनाययादकां॥ ह्रीं महायना
 सनाययादकां॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहावद्रियनासनायया
 दकां॥ नवनाथ॥ ॐ सं ह्रीं गोपा नन्दनाथययादकां॥ व
 लि॥ ह्रीं लाकलीपा नन्दनाथययादकां॥ ह्रीं संवला नन्द
 नाथययादकां॥ ममहाकालानन्दनाथययादकां॥

^{यो १२} ^{च ३} ^{म २ म वि १}
 धमायादुययै केरु ह्यं सिं ह याद्या जिना केरु मि सं निक
 न केरु ह्यं कछा प्ररु रे नी लारु मृगु माला धन नि न ग्रु
 धी न व र्ग न मा मि ॥ ख र्वा का प्री ३ नारु प्र स स ख कम
 ला दि ह्यं धं गु ख धं गू र्ग य क व र्ग ३ गिं श प्र विल स ल
 हि कां द क ह र्ग नी ला ड हं केरु धा र्ग क प्र व स रि ना

६२ ॥ द व ह्य ३ म ३

७१ ॥ २२ डो ॥ २ क १

ध्या २ वि १

य स का द न का र्ग क का द ह्यं क ला या न व य गु कि क
 गालि र्ग नाल अं क डि ४ ॥ ॥ सर्वा धिका प्र नि र्वा न ॥ ग्या स ॥
 उं ह्यं ह द या य न म ॥ उं ह्यं गि र्वा यो व व ॥ उं ह्यं क व
 या य ह्यं ॥ उं ह्यं न य या य व व ॥ उं ह्यं ४ अ ह्यं य रू ॥
 उं व क ग्रा ३ ॥ ॥ उं ह्यं आ धा मा दि य द्रा स ना न स य

क॥ ध्यान॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यतः। हिमक (बुद्ध संकाशं शुद्धसूटिक निमलं ॥
 द्विभुजं चारुयं दानं वा मातुः सङ्गदवर्तनं। शिखरवर्धनः
 महादीर्घं किशिल्या माङ्गवर्धिका ॥ एवया एवया
 ध्यायन् सर्वकामानि साधय ॥ मन्त्र ॥ ॐ ह्रीं क्लीं

कौण्डिनीनिर्वाहस्य गान नृनाथ श्रीमहा निर्वोह
 श्रीसहिनाय सिद्धा नृसिद्धाधिकारुव कौण्डिनी
 नमः॥ ॥ वंद्यो नैलाकृमय प्रसाकला स्वाहा॥
 आराम्य॥ ॥ १॥ विरुनिधाय धूनकावचन
 नमिलकवास रुरुसुनयाव रिक्कायादधस
 मूलमनुवाय॥ नगादकिणरुरुन रुमिसुननमः॥

ॐ स्नानकलाये नमः॥ ॐ च्छाकलाये नमः॥ ॐ क्रि
याकलाये नमः॥ ॐ शक्ति कलाये नमः॥ ॐ कामकला
ये नमः॥ गमादकिं दहसु न या या व ऊ य य य म नु ॥
ऊं ऊं ऊं सर्वजनमादिनि सर्ववर्गं कप्रिमां प्रकृ शरु
सा ह ॥ धन स्वयाय ऊ य य या व मूल म नु ॥ च स या

ल स ग य क्र स ग स क न ॥ १ ग ग य न न वाम द ह स सं
स्मय ग न मूल लिख ग ॥ ग मा द क्ता ना मि क या रू मी क्रि
य ग ॥ ॐ स्नानकलाये नमः॥ ॐ च्छाकलाये नमः॥ ॐ
क्रियाकलाये नमः॥ ॐ शक्ति कलाये नमः॥ ॐ कामक
लाये नमः॥ गमादकिं दहसु ना क्ता य ॥ ॐ मि गिल क
ध व र्ग ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

विष्णुगा॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥ यच्च वा एव श्रुती ॥ नित्यं च कल्याण
गा॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सः सः सं जिवनी जीव या ए गति
सं क्रम रक्षा ला ॥ ॐ ह्रीं श्रीं वद शवाग्मादि नीरु सोऽ कि
न क्रय दय क्रदि डि मला भार्गव क्रम रक्षा ला ॥ कुं भा र्गव
क्रम रक्षा ला ॥ ॐ अम् गम् अम् गा रु व अम् गम् प्री अम् गम्

वर्षिणी अमृतं प्रापय २३ सं ४ स्वाहा ॥ ॐ क्रीं श्रीं क्रीं नमो
रुगवति महेश्वरि अर्चयूष्मिन् ॥ ॐ नित्यं च
कामदद्या ॥ ॥ ॐ हूं श्रूं हूं हूं हूं नमो श्रीं महादेवे ॥ सं
कषिणी काम कान्ति हं सां सु ॥ स्वाहा ॥ ॐ क्रीं श्रीं नमो
सो ॥ ॐ नमो रुगवति मातां गायत्री सर्वजन संभा ह

[illegible]

डिनी श्रुं वे ला का क र्बणी को का मा ग जा व नी को सी
महा को र का रणी वे (ग) स ४ गी या २ ॥ ॥ व नि सि ॥ ५
न मा रु ग व नि श्रुं ऊ डि का ये जां को दू धा त्र अ धा त्र
अ धा त्र म र्वा को को कि नि २ वि श्व या द को ॥ ॥ ५ न मा
रु ग व नि श्रुं ऊ डि का ये मुं को मुं द अ धा न म अ धा

त्रा म र्वा को को कि नि २ वि श्व या द को ॥ ॥ ५ न मा रु ग
व नि सि द् मुं श्रुं ऊ डि क मुं को मुं द ख ग वे धा त्र
अ धा त्र म र्वा के नि २ वि श्व या द को ॥ ॥ ५ अ न
रु ग कि रे त्र वा न न द वी वा धि य न य मुं या द को को ॥
५ अ न रु ग कि रे त्र वा न न द वी म हा वी वि श्व
५

गङ्गाधरीयादकी॥ ॥ धूर्धूर्धूमावनीखाहा॥ धूमा
वनीमल॥ ॥ ॐ ॥ वंजनी॥ मारुधुनिबोध॥ वंज
नी॥ मूलविद्या॥ ॐ ॥ सूर्यकस॥ ॐ ॥ सूर्यगानि
बोध॥ ॐ ॥ सूर्यरुद्र॥ सनिबोध॥ रुद्रनमः॥ वेङ्कटनिबो
ध॥ सुदी॥ मूलनिबोध॥ नागयधस॥ ॥ लोदो॥ ॐ ॥ ॐ

गनिबोध॥ ॐ ॥ रुद्रसः॥ सूर्यकस॥ मूलविद्या॥ ॐ ॥
लोदो॥ ॐ ॥ नयनिबोध॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ नयनिबोध॥
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ आदित्यायनमः॥ सासि॥ सा॥ स्मृ॥ सामा
यनमः॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ अंगायनमः॥ ॐ ॥
वा॥ वा॥ वा॥ वृक्षायनमः॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ वृक्ष

नमः॥ दादिं दां दां दुकायनमः॥ वां वां वां मां
मनेयमायनमः॥ वृं वृं वृं मां ग्राहवनमः॥ वृं
दादिं दां दां कनवनमः॥ दां वृं दां दां ठमन
नमः॥ वृं ॥ रुकसमन॥ नथासाया॥ रु वृं सदीरु
सकी॥ उत्रिया॥ वं दां कीरुस॥ एनमा रुधरीरुयव

क्रवीं सदाउयन॥ ॥ उं दां दां दां दां कां नमः॥ स्वा
दा॥ उं दां दां उच्छिष्टमार्गगयमायसुं मलामार्गगिणी
उच्छिष्टरु वृं वृं वृं वृं दां दां दां ॥ ॥ दां दां दां ॥ येनन॥
दां दां दां ॥ ॥ पूवादि५ रुवरीया ॥ दां दां दां वि
दां दां दां ॥ ॥ दां दां दां उवनयन॥ ॥ दां दां दां

सजयप्रया॥ ॐ कौंखूं कौंखूं कूंखूं श्री सा कठ मा ही नू
दाय रु न १ द रु १ ख कठ रु न १ सर्व द ४ ना ग य कूं
रु ट स्वा हा ॥ अ ४ धा न स अ रु न न दा य ज य प्र या व दा
य ॥ ७ ॥ ॐ शं स ४ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ४ ॐ शं स ४ स शं ॐ ॥ ॐ
ॐ ॐ अ म नी सा य ॐ शं स ४ स शं ॐ ॥ म नू ज य ॥ ॥

१५ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ कृष्ण कर्ण कौं कौं कौं मन्त्रिणी नमः
अथाग्राममुखी कौं कौं किं किं किं किं विधिः ॥ ॥
१६ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ कृष्ण कर्ण कौं कौं कौं मन्त्रिणी नमः ॥ ॥

मालास्वधन ॥ आवस्य ३ ॥ प्राणायाम ॥ वृत्त
३ ॥ आस ॥ मालास्वधन ॥ आवस्य ३ ॥ प्राणायाम ॥ वृत्त

सिद्धयस्ताननय मूलमन्त्रनसाय ॥ ४ ॥ अस्त्राय रुद्र ॥ गान्
अवगुह्यते ॥ यानिमूढा ॥ धियावगय ॥ मालावगय ॥ शिकाया
कास्तु ॥ शिकि शिवात्मक ॥ यन्त्रिकं कुरुली ॥ शिकि ॥ कलनिमय
युग ॥ मांमाल कास्तु यस्तिष्ठि कुरु शस्त्रादा ॥ मांमालमायस
वर्गकिस्तु यिनिचयुर्वर्ग रुद्रयस्त्राह्मात्मसिद्धिदा रुद्रा ॥ ३ ॥
विविधा ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ नमो सिंहासनं दर्व शुद्धं हृदिकनिर्मलं
यस्त्रयकुदस्तु शुद्धं पुनिवर्कगिलाचनं ॥ उद्यमकुरु साक्षाद्यत्तु

प्रवृत्तास्तु सखलं शिकि शिखलखदा इव प्रवृत्तकजाम्बुड ॥ दक्षि
धामार्थवामस्तु उमरु विजयप्रक ॥ नागं कुरु गनीमावृ विजय
यस्त्रयिकुत्र ॥ दक्षिणगलक ॥ ध्यानं वक्ष्ययद्रासनं शिवसदाशि
वयस्तु किं शिवसं कुरु ॥ गायत्र ॥ ॐ नमो ध्यान ॥ ॥ पुनिस्त्रि
शिववर्ग ॥ महादवामहात्मनं देवदेवा धिगवश्चयुवना नि
चयुर्दक्ष ॥ पुनिस्त्रि ॥ सियत्यर्थं अस्कायुर्वर्कमेसवयाय
विनिर्मकस्तु नय ॥ ३ ॥ शिवास्तु या ॥ पुनिस्त्रि ॥ ॥ उय ॥